Vol 5 Issue 12 September 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | September - 2016

Review Of Research

'निर्मला' उपन्यास में स्त्री विमर्श

प्रा. डॉ. सविता चौधरी
किसान महाविद्यालय, पारोला जि जलगाव.

संक्षेप :

नारी सृष्टि का श्रृंगार प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार शक्ति का अक्षय भंडार प्रेरणा का पुंज करूणा का अवतार और सेवा का सदन हैं।मनु ने नारी के इन्हीं उदात्त गुणों का मूल्यांकन मनुस्मृति में किया हैं। स्त्री विमर्श के संदर्भ में यदि विचार करे तो यह साहित्यिक न होकर सामाजिक आंदोलन के रूप में उभरा हैं। 'स्त्री' यह शब्द 'स्त्रत' धातु से विकसित हुआ हैं जिसका अर्थ है 'फैलना' या 'फैलाना'। इसीलिए स्त्री का अर्थ है– मातृत्वॉ ममताॉ प्रेम को फैलानेवाली। स्त्री को विभिन्न यातनाओॉ अत्याचारोॉ अन्यायोॉ मानसिक समस्याओं का सामना करना पडता हैं। जब स्त्री अपने अस्तित्वॉ न्याय विचार के लिए संघर्ष करती है तो वह स्त्री विमर्श कहलाता है।''[1] सुप्रसिद्ध स्त्री विमर्श की लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार ''हमें किसी पर न जय चाहियॉ न किसी से पराजयॉ न किसी पर प्रभुत्व चाहियॉ न किसी पर प्रभुता।''[2] स्त्री विमर्श का आरंभ पाश्चात्य देशों में 'सिमोन द बोआ' द्वारा रचित सेकंड सेक्स 1960 से माना जाता हैं। सिमोन द बोआ ने कहा है कि ''औरत को औरत होना सिखाया जाता हैं। औरत बनी रहने के लिए अनुकूल बनाया जाता हैं।''[3] भारतीय परिपेक्ष्य का और पाश्चात्य परिपेक्ष्य का यदि विचार किया जाए तो दोनों विमर्श अपनी अलग अलग पहचान एवं अस्तित्व रखते हैं। वस्तुतः स्त्री विमर्श पुरूषों के विरूद्ध अभियान नहीं हैॉ न ही उनसे प्रतिस्पर्धा करने की चेष्टा है। स्त्री विमर्श स्त्री को स्त्री रूप में बनाए रखने की विचारणा हैं।''[4] भारतीय परिपेक्ष्य में स्त्री विमर्श के विविध आयाम मिलते हैं जिसमे ग्रामीणॉ महानगरीयॉ निम्नवर्गीयॉ मध्यवर्गीयॉ नौकरीपेशाॉ उच्च पदस्थ दाम्पत्य जीवन आदि को लेकर वे चलते हैं। स्त्री विमर्श पर दो प्रकार के साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई हैं। एक महिला साहित्यकारों ने और दूसरे पुरूष साहित्यकारों ने। महिला साहित्यकारों द्वारा महिलाओं के दुखों को समस्याओं को अनुभूतियों को व्यक्त करना और दूसरे पुरूष साहित्यकारों द्वारा महिलाओं की संवेदनाओं को व्यक्त करना। महिलाओं द्वारा महिलाओं की संवेदनाओं को व्यक्त करना आसान है किंतु पुरूष साहित्यकारों द्वारा महिलाओं की भावनाओं को व्यक्त करना विशेष बात है। इसी वजह से मैंने प्रेमचंद के निर्मला उपन्यास को केंद्र में रखकर निर्मला के अंतर्द्वन्द्व को व्यक्त करने का प्रयत्न किया हैं। 'निर्मला' सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास हैं। इस उपन्यास के माध्यम से दहेजॉ अनमेल विवाहॉ विधवा पुनर्विवाहॉ पारिवारिक कलहॉ मानसिक उद्वेलन के माध्यम से विभिन्न विसंगतियों को उभारने की कोशिश की हैं।

प्रेमचंद हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यासकार तथा युग प्रवर्तक है। इनके उपन्यासों में प्रथम बार जनसामान्य की वाणी हिंदी और कला केवल मनोरंजन का खिलवाड न रहकर जीवन मर्मों को उद्घाटित करने वाली बनी। यथार्थ के धरातल पर जनजीवन की अध्याचित विवशताओं कों प्रेमचंद ने मार्मिकता से उद्घाटित किया हैं।

प्रेमचंद के साहित्य के संदर्भ में निर्मल वर्मा कहते हैं कि ''प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय मनुष्य की बनावट के पहली बार दर्शन हुए। यह एक चेहरे का सत्य नहीं बल्कि ऐसे सत्य का चहेता हैं जिसे उन्होंने शहरीॉ ग्रामीण और कस्बाई चेहरों के बीच गढा था।''[5] प्रेमचंद जिस समय में लिख रहे थे उस समय देश में एक तरफ सामंतवाद था और दूसरी और गुलामवाद था। ऐसे समय में प्रेमचंद के 'गोदान' के माध्यम से धनिया हमारे सामने आती हैॉ जो निर्भिक हैॉ विद्रोही है। इसी वजह से समाज व्यवस्था के विरूद्ध खडी होकर वह प्रसव वेदना से कराह रही सिलिया को अपने घर पनाह देती हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में हर वर्गॉ जाति के पात्रों को स्थान दिया हैं। प्रेमचंद ही वह साहित्यकार है जो ब्राम्हण लडकी का विवाह दलित लडके से करवा सकते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से 1) स्त्री और पुरूष के लिए एक विवाह का नियम बनाया। 2) पुरूष की सम्पत्ति पर स्त्री का समान अधिकार हो। 3) पिता की सम्पत्ति में लडके और लडकी दोनों का अधिकार। 4) तलाक का अधिकार स्त्री को भी होना चाहिए। 5) यदि वह गृहिणी जीवन बसर करना चाहती है तो अपनी इच्छानुसार विवाह करेगी अन्यथा कुँआरी रह जाएंगी। यह उस समय सोचना जब देश आजाद भी नहीं हुआ था। यह क्रांति नही तो और क्या है? हिंदी साहित्य में प्रेमचंद ही वह पहला व्यक्ति है जिसने वह सारी बाते पहली बार यथार्थ रूप में हमारे सामने रखी जो इससे पहले इतनी स्पष्ट रूप से नहीं रखी गई थी। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में हर वर्गॉ जाति के पात्रों को स्थान दिया हैं। 1930–31 के बीच प्रेमचंद ने स्त्री विमर्श पर जो लिखा उसे आज हम अनुभव कर रहे हैं और निश्चित रूप से उस समय ऐसा लिखा जाना भारतीय जनता के रूढिगत विचारों को ठेस पहुँचाने वाला था। निर्मला के प्रेमचंद निश्चित रूप से अलग हैं।

'निर्मला' सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास हैं। जिसमें प्रेमचंदजी ने दहेजॉ अनमेल विवाहॉ पुनर्विवाहॉ पारिवारिक कलहॉ मानसिक उद्वेलन को व्यक्त किया हैं।

1 दहेज– प्राचीन समय से ही हमारे देश में दहेज की प्रथा चली आ रही हैं। दहेज के बगैर हमारे यहाँ विवाह सम्पन्न नहीं होते। माता पिता द्वारा लडकी को यथास्थिति

देने वाले दान के रूप में इसकी व्याप्ति थी। धीरे धीरे इसने प्रथा का रूप धारण कर लिया। और आज इसने प्रतिष्ठा का रूप धारण कर लिया है। 'निर्मला' उपन्यास में मुंशी प्रेमचंद ने दहेज की इसी लालसा को व्यक्त करते हुए उसके विघ्वंसक रूप को हमारे समक्ष रखने का प्रयत्न किया हैं।

'निर्मला' उपन्यास में निर्मला के पिता उसके लिए वर की तलाश कर रहे हैं। बाबू भालचंद्र सिन्हा के ज्येष्ठ पुत्र भुवन मोहन सिन्हा का रिश्ता उनके घर आता हैं। वर पिता की ईच्छा है कि विवाह में जो लोग जायें उनका आदर सत्कार अच्छी तरह होना चाहिएॉ जिसमे आपकी और मेरी जग हँसाई न हो।''[6] इसके अलावा हमें कुछ नहीं चाहिए। यह आश्वासन पाकर वे खुशी से फुले न समाये। विवाह तय हो गया किंतु होनी को कुछ और ही मंजुर था। निर्मला के पिता की एक गुंडे द्वारा हत्या कर दी जाती हैं। कल्याणी पर जैसे वज्र प्रहार हो जाता हैं। पति की मृत्यु होत ही सारी आपदाए मुँह बाए खडी थी। अब तक जो रिश्तेदार आठों प्रहर पडे रहते थे। 'धीरे धीरे एक महीने के भीतर भांजे–भतीजे बिदा हो गये। जिनका दावा था कि हम पानी की जगह खून बहानेवालों में हैॉ वे ऐसा सरपट भागे कि पीछे फिरकर भी न देखा। दुनिया ही दूसरी हो गयी।''[7] जो बगैर दहेज के विवाह करना चाहते थे उन्होंने भी उदयभानु के गुजरते ही पिठ फेर ली। पंडितजी जब विवाह की बात करने जाते है तब बाबु भालचंद्र पंडितजी से कहने लगे– ''ईश्वर को मंजूर ही न था कि वह लक्ष्मी मेरे घर आतीॉ नही तो क्या यह वज्र गिरता? सारे मनसूबे खाक में मिल गये।''[8] पंडितजी को वहीं बैठाकर भालचंद्र पत्नी से सलाह लेने जाते हैं। रंगीलीबाई बैठी पान लगा रही थीं। बोली– कह दिया न कि हमें वहाँ ब्याह करना मंजूर नहीं। जब दूसरी जगह दस हजार नगद मिल रहे हैॉ तो वहाँ क्यों न करू? उनकी लडकी कोई सोने की थोडे ही हैं। वकील साहब जीते होते तो शरमाते शरमाते पन्द्रह बीस हजार दे मरते। अब वहाँ क्या रखा हैं?''[9] दहेज न दे पाने की वजह से निर्मला का विवाह तीन बच्चों के बाप पैंतीस साल के बूढे वकील के साथ तय होता हैं। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से भविष्य मे होने वाले दहेज के दुष्परिणामों की और संकेत किया हैं।

2.अनमेल विवाह –

ऐसा विवाह जिसमे किसी प्रकार का कोई मेल न हो अनमेल विवाह कहलाता हैं। 'निर्मला' का भालचंद्र के यहाँ से विवाह टूटने पर कल्याणी जल्द से जल्द निर्मला का विवाह कर देना चाहती हैं। पंडित मोटेराम पर यह जिम्मेदारी सौपी जाती हैं। पंडितजी पंद्रह दिनों में पांच रिश्तों के साथ वापस लौटते हैं। ''यह देखिए इस लडके का बाप डाक के सीगे में 100रू महिने का नौकर हैं। लडका अभी कॉलेज में पढ रहा हैं। मगर नौकरी का भरोसा हैॉ घर में कोई जायदाद नहीं। लडका होनहार मालूम होता हैं। खनदान भी अच्छा हैं 2000 में बात तय हो जाएंगी।''[10] दूसरा लडका रेल के सीगे में 50 रू महिना पाता हैं। माँ बाप नहीं है। बहुत ही रूपवानॉ सुशील मगर खानदान अच्छा नहीॉ कोई कहता हैॉ माँ नाईन थीॉ कोई ठकुराईन थी । वहाँ कुछ लेना देना न पडेगा। तीसरा जमीदार का लडका है कोई एक हजार सालाना नफा है। कुछ खेती बारी भी हैं। लडका पढा लिखा थोडा ही हैं; पर कचहरी के काम में चतुर हैं। दुहाजू है पहली स्त्री को मरे दो साल हुए है ।चार हजार सुनाते हैं। चौथा लडका वकील हैं उम्र कोई पैतीस साल होगी। तीन चार सौ की आमदनी हैं। पहली स्त्री मर चुकी हैं। उससे तीन लडके भी हैं। पुराने रईस है ।लेनदेन का कोई झगडा नहीं। पाँचवा लडका बी.ए हैं। बाप के छापखाने में काम करता हैं। घर में प्रेस के सिवाय कोई जायदाद नहीं। खानदान न बहुत अच्छा न बहुत बुरा। लडका बहुत सुंदर और सच्चरित्र हैं। मगर एक हजार से कम में मामला तय न होगा। अब बताइए आप कौन सा वर पंसद करती हैं? मुझे तो दो वर पंसद है एक जो रेलवई में हैं और दूसरा जो छापखाने में काम करता हैं।

कल्याणी– यहाँ एक हजार देने को कहाँ से आयेगा? भोजन मिलता जायॉ यहीं गनीमत है। रूपये कहाँ से आयेंगे? बस वकील साहब ही बच रहते हैं। पैंतीस साल की उम्र भी कोई ज्यादा नहीं। इन्हीं को क्यों न रखिए।''[11] अंत में दहेज के अभाव में निर्मला का विवाह 35 वर्षीय दुहाजू मुंशी तोताराम से हो जाता हैं।

3– मानसिक उद्वेलन –

निर्मला जिस उम्र में गुड्डे गुडियों से खेलती हैं उसी उम्र में उसका विवाह पिता तुल्य व्यक्ति से हो जाता हैं जो प्रेम के नहीं आदर के योग्य था। इसी वजह से निर्मला गृहस्थी के संबंध में उनसे खूब बातें करती। इन्हीं बातों के लायक वह उनको समझती थी। ज्योंही कोई विनोद की बात उनके मुँह से निकल जातीॉ उसका मुख मलिन हो जाता था। निर्मला जब आईने में अपने सौंदर्य की सुषमापूर्ण आभा देखतीॉ तो उसका हदय एक सतृष्ण कामना से तडप उठता था। उस वक्त उसके 'दय में एक ज्वाला सी उठती। मन में आता इस घर में आग लगा दूँ। अपनी माता पर क्रोध आता कि क्यों ऐसे बुढे व्यक्ति के साथ मुझे ब्याह दिया।''[12] इधर तोताराम निर्मला का प्रेम और विश्वास पाने के लिए बहादूरी के मनघडंत किस्से सुनाते हैॉउसकी सुंदरता की प्रशंसा करते हैॉ उसे सैर तमाशे दिखाने के लिए लेकर जातोॉ लेकिन निर्मला को इन सब बातों से घृणा होती थी। वहीं बातोॉ जिन्हें किसी युवक के मुँह से सुनकर उसका 'दय प्रेम से उन्मत्त हो जाताॉ वकील साहब के मुँह से निकलकर उसके 'दय पर शर के समान आघात करती थी। उनमे रस न थाॉ उल्लास न थाॉ उन्माद न थाॉ 'दय न थाॉ केवल बनावट थीॉ धोखा थाॉ और था शुष्कॉ नीरस शब्दाडम्बर। उसे इत्र और तेल बुरा न लगताॉ सैर तमाशे बुरे न लगतें बनाव सिंगार भी बुरा न लगताॉ बुरा लगता था तो केवल तोताराम के पास बैठना।''[13] इस प्रकार के जीवन से निर्मला को अंदर ही अंदर घुटन होती थी। वह न तो जी पा रही थी और न मर पा रही थी। उसके मन में आता कि इस घर में आग लगा दूँ। इसी मानसिक उद्वेलन में वह अपना जीवनयापन करने के लिए विवश हैं।

पारिवारिक कलह –

'निर्मला' उपन्यास के माध्यम से मुंशी प्रेमचंदजी ने पारिवारिक कलह की पराकाष्ठा को व्यक्त किया है। मुंशी तोताराम ने बुढापे में पंद्रह वर्षीय निर्मला से विवाह तो कर लिया किंतु न तो वे निर्मला को खुश रख पाए और न स्वयं सुखी रह पाए। निर्मला को खुश रखने के अथक प्रयास करने के बावजूद निर्मला का प्रेम और विश्वास प्राप्त नहीं कर पाए। उन्हें महसुस होने लगा कि स्त्री अपने हमउम्र व्यक्ति के साथ ही सुखी संसार व्यतित कर सकती हैं। परिणाम यह हुआ कि मुंशी तोताराम निर्मला को लेकर अपने ही पुत्र मंसाराम पर संदेह करने लगे। उसे घर से निकालकर होस्टल में भिजवा दिया। इधर रूक्मिणी निर्मला को कोसने का कोई मौका हाथ से न जाने देती थी। मंसाराम के जाते ही घर तिनके की तरह बिखर गया। तोताराम के संदेह ने मंसाराम की जान ले ली। मंसाराम के जाते ही तोताराम पुरी तरह टूट गए। अब उनका कहीं मन नहीं लगता था। कचहरी से घंटे दो घंटे में वापस आ जाते थे। मंसाराम की मृत्यू होने से सियाराम और जियाराम दोनों पिता की सूरत से नफरत करते थे। उनकी हर एक बात का विरोध करते थे। ऐसे हालात में निर्मला इस बात को लेकर अब काफी चिंतित रहने लगीॉ न जाने इस लडकी का क्या होगा? घर की

आर्थिक स्थिति अत्यंत नाजुक है। ऐसी स्थिति में जियाराम निर्मला के जेवर चुराकर मित्रों के साथ औने पौने बेच देता हैं। पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई जाती हैं।पुलिस छानबीन के दौरान जियाराम तक पहुँच जाती है। अब जियाराम का बचना मुश्किल था इसीलिए मुंशीजी रिश्वत देकर मामला रफा दफा करते हैं किंतु जियाराम डर के मारे सदा के लिए चला जाता हैं। अब बचता है सियाराम । घर से तंग आकर एक दिन वह भी किसी साधू के साथ चला जाता हैं। अब मुंशी तोताराम से काम न होता था जो मुकदमे आते थे वे बिगड जाते थे। सुबह से भूखे प्यासे भागदौड करते रहे पर हाथ कुछ न लगा। घर आकर कुछ देर ऐसे ही सुस्त पडे रहे । रात के भोजन के समय जब उन्होंने सियाराम का पूछा तब घर में किसी को कुछ भी पता नहीं थाॉ मुंशी तोताराम चिंतित हो सोचने लगे ''तीन लडकों में केवल एक बच रहा हैं। वह भी हाथ से निकल गया तो फिर जीवन में अंधकार के सिवाय और क्या हैं? कोई नाम लेने वाला भी न रहेगा। हा! कैसे कैसे रत्न हाथ से निकल गए ? मुंशीजी की आँखों से अश्रुधारा बह रहीं थी तो कोई आश्चर्य है?''[14] यहीं सोचते सोचते तीन दिन बित जाते है। सबदूर खोजने पर भी जब सियाराम न मिला तब तोताराम ने निर्मला की और आग्नेय नेत्रों से ताकते हुए कहाँ– ''हट जाओं सामने से नहीॉं तो बुरा होगा। तुम्हारे ही कारण आज मेरी यह दशा हो रहीं हैं। आज से छहसाल पहले क्या इस घर की यहीं दशा थी? तुमने मेरा बना बनाया घर बिगाड दियाॉ तुमने मेरे लहलहाते बाग को उजाड डाला। केवल एक दूँठ रह गया हैं। उसका निशान मिटाकर तभी तुम्हें संतोष होगा।''[15] इस प्रकार मुंशीजी ने सारा दोष निर्मला पर मढ दिया और सियाराम की खोज में निकल पडे। एक महिना बितने के बावजूद भी मुंशी प्रेमचंद घर न लौटे। चिंतावश निर्मला ने बिस्तर पकड लिया किंतु जाते–जाते रूक्मिणी की गोद में बच्ची को छोडतें हुए कहाँ दीदीजी– अगर यह बच्ची जीती जागती रहे तो किसी अच्छे कुल में इसका ब्याह कर दीजिएगा। ''चाहे क्वाँरी रखियेगाॉ चाहे विष देकर मार डालियेगाॉ पर कुपात्र के गले न मढियेगाॉ इतनी ही आपसे मेरी विनय हैं। तीन दिनों तक निर्मला रोती रही अंत में चौथे दिन सन्ध्या समय वह विपत्ति कथा समाप्त हो गई। लोग सोच रहे थे कि अब अंतिम संस्कार कौन करेगा ? तभी एक बुढा पथिक थका मांदा आकर खडा होता है वह और कोई नहीं मुंशी तोताराम थे।

पुनर्विवाह –

मुंशी प्रेमचंदजी ने 'निर्मला' उपन्यास में पुनर्विवाह और उससे उत्पन्न समस्या की और हमारा लक्ष्य केंद्रित करने का प्रयत्न किया हैं। पत्नी की मृत्यु पश्चात तोताराम अपनी बेटी की उम्र की लडकी के साथ पुनर्विवाह करते है। तोताराम सोचते है कि दूसरा विवाह कर बची हुई उम्र चैन से बित जाएगी किंतु होता उसके विपरित हैं। दूसरी पत्नीका प्रेम और विश्वास पाने के लिए तोताराम ने अपने सबसे होनहार पुत्र पर संदेह किया। परिणामस्वरूप एक–एक करके तीनों पुत्र हाथ से निकल गए। घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। इन सब हालतो को झेलते–झेलते निर्मला भी अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर लेती हैं। अंत में बचते है मुंशी तोतारामॉ रूक्मिणी और नन्हीं आशा। देखते ही देखते मुंशी तोताराम की पुरी गृहस्थी ताश के पत्तों की तरह बिखर जाती हैॉ रह जाती है सिर्फ यादें और पश्तावा।

निष्कर्ष –

अंततः कहाँ जा सकता है कि निर्मला उपन्यास में नारी संबंधी समस्याओं को प्रस्तुत कर उनका निराकरण करने का प्रयास किया हैं। उक्त उपन्यास में ऐसी समस्याएं पायी जाती हैॉ जिन्हें हर एक सहृदय व्यक्ति अपने जीवन से जोडकर सोचने लगता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में नारी नारी की पीडा एवं उकताहट को वाणी प्रदान की हैं। नारी जीवन से संबंधित समस्याओं में नारी पात्रों को रोजमर्रा के जीवन में भोगते हुए कटू यथार्थ का चित्रण किया हैं तथा पात्रों के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने बाल विवाहॉ अनमेल विवाहॉ पारिवारिक कलहॉ पुनर्विवाह के दुष्परिणामों को हमारे समक्ष रखा है।

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद्र एकमेव ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने उस समय की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए समाज परिवर्तन करने का कार्य किया हैं।

संदर्भ –

1.आदिनाथ शेषराव भाकडः अल्पसंख्यकों का विचार विश्व : मार्च 2013 पृ 309
2.डॉ करूणा उमरेॉ स्त्री विमर्शॉ साहित्यिक और व्यवहारिक संदर्भ भूमिका पृ 09
3. वैशाली देशपांडे : स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार
4.डॉ करूणा उमरे स्त्री विमर्श साहित्यिक और व्यवहारिक संदर्भ भूमिका पृ 09
5.दस्तावेज 142 जनवरी–मार्च 2014 पृ 47
6.प्रेमचंदः निर्मला पृ 03
7.वहीं पृ 16
8.वहीं पृ 03
9.वहीं पृ 16
10.वहीं पृ 19
11.वहीं पृ 22
12. वहीं पृ 37
13.वहीं पृ 37
14.वहीं पृ 163
15.वहीं पृ 163

प्रा. डॉ. सविता चौधरी
किसान महाविद्यालय, पारोला जि जलगाव.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com